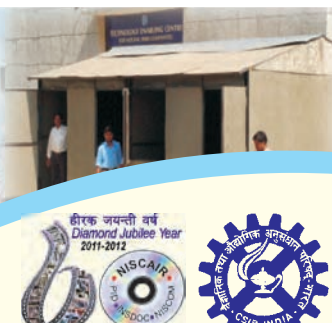


ISSN 0973-2616



OPEN SOURCE
DRUG DISCOVERY
FOUNDATION

सी एस आई आर समाचार

प्रगति, विश्वास और आशा

वर्ष 29 अंक 1 जनवरी 2012

इस अंक में

नववर्ष
2012
मंगलमय हो!

2

सीएसआईआर की सफलता की सुगंध फैलाता मेन्थॉल मिन्ट.....



4

मायो क्लिनिक तथा सीएसआईआर ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये.....



5

एसीएस शोध पत्रिकाओं के सम्पादकों ने एनसीएल, पुणे का दौरा किया.....



6

सीएसआईआर-राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान लखनऊ में गुलदाउदी और कोलियस प्रदर्शनी.....



9

सीरी, पिलानी में सीएसआईआर का युवाओं के लिए विज्ञान में नेतृत्व कार्यक्रम (सीपीवाईएलएस-2011).....



website: <http://www.csir.res.in>

"When it comes to health, we need to have a balanced view between health as a right and health as a business"

Prof. Samir K. Brahmachari
Chief Mentor OSDD
Director General, CSIR





सीएसआईआर की सफलता की सुगंध फैलाता मेन्थॉल मिंट

आज सीएसआईआर के महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में से एक - **सीएसआईआर-800** पहल-निम्न स्तरीय जीवन जी रहे देश के 800 मिलियन लोगों की सामाजिक आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए तैयार है। इस पहल का मुख्य उद्देश्य स्वास्थ्य, कृषि के क्षेत्र में एस एंड टी का हस्तक्षेप करना है जिससे निष्पक्ष और व्यापक वृद्धि हो। ग्रामीण भारत के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए सीएसआईआर प्रौद्योगिकी के सही उपयोग का एक उत्कृष्ट उदाहरण है पुदीने या मिंट की बेहतर किस्मों की खेती।

सीएसआईआर के वैज्ञानिकों द्वारा प्रदत्त पुदीने की तेल की अत्याधिक उपलब्धि देने वाली उत्तम किस्मों के कारण मेन्थॉल मिंट (**मेंथा आर्वेन्सिस**) उत्तरी भारत के सिंधु गंगा के मैदानों में कृष्य आज एक प्रमुख औद्योगिक फसल है। हिमालय की तराई में किसान पुदीने की इन तेल-उत्पादक किस्मों से धनोपार्जन कर रहे हैं। सीएसआईआर के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित पुदीने की अनेक नवीन किस्मों की खेती के लिए 400,000 हेक्टेयर भूमि का उपयोग किया जा रहा है। इन कीट-रोधी और उच्च तेल-उत्पादक किस्मों को हजारों किसानों ने अपनाया है, क्योंकि वे अपनी आजीविका पुदीने की खेती से अर्जित करते हैं। इतना ही नहीं, भारत अब चीन को दूसरे स्थान पर खिसकाकर मेन्थॉल मिंट और उसके तेल का सबसे बड़ा निर्यातक देश बन गया है।

पुदीना एक सगंध शाक है जो विश्वभर में फैला हुआ है। **लैमिनेसी** कुल से संबंधित पुदीने की आज अनेक प्रजातियां और संकर किस्में ज्ञात हैं। यह शाक टंडी, नम मृदा में बहुत तेजी से बढ़ता है और इसे आंशिक छाया की जरूरत होती है। पुदीने की पत्तियों को कभी भी उगाया जा सकता है और

ताजा या सुखाकर प्रयोग किया जा सकता है। ये अत्यंत सुगंधित पत्तियां रसोई के अनेक पकवानों जैसे चटनी, जैली, सिरप, पेय, कैंडी और आइसक्रीम आदि का महत्वपूर्ण घटक होती हैं। इसके अलावा, पुदीने के तेल का उपयोग श्वास फ्रेशनरों, मुख प्रक्षालकों, दंतमंजनों, शैम्पू, च्युइंगमों और चॉकलेट में भी होता है। एरोमाथैरेपी में भी एक महत्वपूर्ण सगंध तेल के रूप में इसे उपयोगी पाया गया है। पाक संबंधी और कॉस्मेटिक उपयोगों के अलावा, पुदीने में औषधीय गुण भी होते हैं जैसे कि यह पतंगें, चींटियों और तिलचट्टे जैसे सामान्य कीटों के लिए पुदीने का तेल एक कीटनाशक का भी काम करता है।

आसवन करने पर, पुदीने के तने और पत्तियों से एक सगंध तेल प्राप्त होता है जिसमें बड़ी संख्या में सगंध रसायन जैसे मेन्थॉल, मेन्थॉन, आइसोमेन्थॉन, मेन्थोफ्यूरॉन, कार्वोन, लिनालूल, लिनालिल एसीटेट और पाइपेरीटेनोन ऑक्साइड होते हैं। पुदीना प्रजातियों के सगंध तेल का संघटन, आसवन की विधि, संग्रहण के प्रकार, फसलावधि, कटाई का समय और मौसम के अतिरिक्त पर्यावरण और पादप जीनोटाइप के बीच परस्पर क्रिया से अत्यंत प्रभावित होती है। सामान्यतः कटाई के समय का तेल की उपलब्धि और गुणवत्ता से गहन संबंध होता है। व्यावसायिक स्तर पर उगाई गई पुदीना प्रजातियों की विभिन्न किस्मों द्वारा उत्पादित सगंध तेलों के अंश और गुणवत्ता पर फसल की अवधि के प्रभावों की जांच करने के लिए अध्ययन किए गए हैं।

केन्द्रीय औषध एवं सगंध पौधा संस्थान (सीमैप), लखनऊ के वैज्ञानिकों ने पुदीने की बेहतर किस्में विकसित करने के लिए व्यापक काम किया है, और कई नए

जीनोटाइप का एकस्वीकरण (पेटेंट) कराया है। सामान्यतः, पुदीना प्रजातियों पर नाशककीट, विशेष रूप से पॉलीफेगस लेपीडॉप्टेरन कीट, जिन्हें हेयरी कैटरपिलर (**स्पाइलार्कशिया ऑब्लिका**) कहते हैं, आक्रमण करते हैं। इसलिए, पुदीने के कीट-सह्य जीनोटाइप का विकास, खाद्य सुरक्षा के संदर्भ में बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। इस संदर्भ में, **मेंथा आर्वेन्सिस** की **संभव** नामक उच्च कीट-सह्य किस्म का विकास **अंतःपात्रे** हेरफेर द्वारा किया गया।

एस. ऑब्लिका की प्राकृतिक संक्रमण अवस्थाओं के अंतर्गत और पौधों पर कीटनाशियों का छिड़काव न किए जाने की स्थिति में होने वाली 50-60 प्रतिशत क्षति की तुलना में पुदीने की **संभव** किस्म ने मात्र 10 प्रतिशत की क्षति का लाभ प्रदर्शित किया। इसके अतिरिक्त **संभव** ने अतिवृद्धि भी प्रदर्शित की कि केवल 110 दिनों में इसके छत्रक का व्यास लगभग 85-90 सेमी. हो गया। औसत उपलब्धि लगभग दो क्विंटल प्रति 100 वर्गमीटर क्षेत्र देखी गई। मेन्थॉल तेल की उपलब्धि भी लगभग 0.8 प्रतिशत होती है जो **संभव** में बहुत अधिक है।

सीमैप के वैज्ञानिकों ने **मेंथा स्पिकाटा** पुदीने की बहुउपयोगी किस्म **गंगा** विकसित की है। पुदीने की यह किस्म विलक्षण है और अन्य मौजूद किस्मों से भिन्न है क्योंकि यह न केवल पाकशाला में उपयोगी है बल्कि कृषि-संरक्षक के सुरक्षित स्रोत के रूप में जैव-सुसंगत भी है। पुदीने की यह किस्म, गंगा नदी के किनारे से एकत्रित पुदीने के आण्विक परिवर्तों की उक्त संवर्धन द्वारा प्रवर्तित समष्टि से एक नवीन **अंतःपात्रे** चयन है। यह मैदानों में भी अच्छी तरह बढ़ती है और इसे पूरे वर्ष रखा जा सकता है। इस



सिम-इंडस



मेंथा पाइपेरिता/पिपरमिट (सिम-मधुरस)



मेंथॉल मिंट (मेंथा आर्वेन्सिस)

किस्म से निष्कर्षित तेल एक कृषि संरक्षक होता है, क्योंकि यह अधिकांश आटे और दालों के भृंग, अनाज बेधक और चावल के घुन जैसे संगृहीत अनाज को संक्रमित करने वाले नाशक कीटों के विरुद्ध कीट-रोधी क्रिया दिखाता है।

डमरू, मेंथॉल मिंट **एम. आर्वेन्सिस** की एक दो तरह से उपयोगी किस्म है। यह न केवल एक स्थायी और तेल की अधिक उपलब्धि देने वाली किस्म है बल्कि अधिक जीवनक्षम बीज उत्पन्न करने में भी सक्षम है। पुदीना बीज की अधिक उपज देने वाली किस्म पर्ण धब्बा, रस्ट और चूर्णिल मिल्ड्यू रोगों के प्रति भी बेहतर सह्यता दिखाती है। **डमरू** पुदीना से 78-80 प्रतिशत मेंथॉल और 12-17 प्रतिशत आइसोमेंथॉन युक्त सगंध तेल प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त, यह किस्म समष्टि में आउट-क्रॉसिंग के बावजूद पादप लक्षणों के लिए समष्टि में समरूपता बनाए रखने में भी सक्षम होती है।

नीरकालका, **मेंथा आर्वेन्सिस** और **मेंथा स्पिकाटा** के बीच लैंगिक क्रॉसिंग द्वारा सीमैप के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित पुदीने का एक संकर पौधा है। यह संकर कायिक रूप से भूस्तारियों या स्तंभ की कलमों द्वारा उगाया जाता है और व्यावसायिक खेती के लिए उपयुक्त है। **नीरकालका** से तेल की अधिक उपज होती है और यह **एम. आर्वेन्सिस** और **एम. स्पिकाटा** दोनों के मिले-जुले

लक्षण दिखाता है। इसमें **एम. आर्वेन्सिस** की तरह प्रचुर वृद्धि होती है जबकि कार्वोन प्रकार के तेल के अभिलक्षण **एम. स्पिकाटा** जैसे होते हैं। इसका तेल कार्वोन (64-76%) और लिमोलीन (6.8-23%) प्रचुर होता है। इससे औषधीय और सगंध उत्पादों में उपयोगी कार्वोन और मेंथॉल दोनों की मनोहारी सुगंध आती है। ताजे शाक में लगभग 0.8% तेल सहित **नीरकालका** प्रति हेक्टेयर लगभग 102 किग्रा. तेल उत्पादित करता है। यह कृषिजन्य लक्षण **नीरकालका** को व्यावसायिक खेती के लिए उपयुक्त बनाते हैं। **नीरकालका** पर्ण धब्बा, रस्ट और चूर्णिल मिल्ड्यूरोधी भी होता है।

सीएसआईआर के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित उत्तम किस्म **कोसी** की प्रति कैपिट उत्पादकता ने इस फसल को किसानों के लिए रबी और खरीफ के बीच एक बोनस फसल बना दिया है। ऐसा समझा जाता है कि ₹ 3,00,000 से अधिक किसान परिवार इस फसल को नियमित रूप से उगाकर मेंथॉल मिंट तेल के वैश्विक उत्पादन में 75-80S का योगदान दे रहे हैं, जिससे उन्हें लगभग 6 महीनों या दो फसलों में प्रति हेक्टेयर ₹ 75,000 का लाभ होता है। भारत ने मेंथॉल मिंट तेल के उत्पादन और आपूर्ति में वैश्विक नेतृत्व प्राप्त करने के साथ-साथ लगभग 4 करोड़ मानव दिवस प्रतिवर्ष का

रोजगार भी उपलब्ध कराया है।

सक्षम पुदीने की मेंथॉल की उच्च उपज देने वाली किस्म है जिसे सीमैप के वैज्ञानिकों ने **एम. आर्वेन्सिस** सोमाक्लोन्स की समष्टि के **अंतःपात्रे** संवर्धन की स्क्रीनिंग द्वारा चुना है। संवर्धन माध्यम में उच्च मेंथॉल सान्द्रता सह्य क्लोनों के लिए **अंतःपात्रे** उगाए गए छोटे पौधों की बड़े पैमाने पर स्क्रीनिंग के लिए पुदीने के जीनोटाइप **हिमालय** का प्रयोग मातृ स्टॉक के रूप में किया गया। चुने गए क्लोनों ने क्षेत्र परीक्षण करने पर अति उच्च मेंथॉल प्रति इकाई बायोमास का उत्पादन किया और इस प्रकार बड़े पैमाने पर व्यावसायिक खेती के लिए उपयुक्त एक बेहतर जीनोटाइप सामने आया। वैज्ञानिकों ने **हिमालय**, **कोसी** और **कालका** नामक पुदीने की उपलब्ध किस्मों का प्रयोग करके वृद्धि और लक्षणों का अनुमान लगाने के लिए तुलनात्मक क्षेत्र मूल्यांकन परीक्षण भी किए। चुने गए क्लोन **सक्षम** से मेंथॉल की अत्यन्त उच्च (83%) उपलब्धि प्राप्त हुई और सबसे उत्तम किस्म **कोसी** से कुल 22.6% उच्च मेंथॉल का उत्पादन हुआ। इससे प्रति इकाई बायोमास अधिक सगंध तेल (0.82%) की भी प्राप्ति हुई।

पुदीने की एक अन्य **सिम-इंडस** नामक किस्म में मेंथोफ्यूरॉन (3,6-डाइमिथाइल-4,5,6,7 टेट्राहाइड्रोकुमैरॉन) होता है जो **मेंथा पाइपेरिता** की पत्तियों से निष्कर्षित

सगंध तेल प्रमुख सगंध संघटकों में से एक है। मेंथोफ्यूरोन कुछ संश्लेषित सगंध तेलों जैसे कि पिपरमिंट ऑयल के नियमन के लिए महत्वपूर्ण है। यह सगंध घटक सीमित उपलब्धता वाला एक महंगा रासायनिक यौगिक है। क्योंकि सामान्यतया एक पौधे से 0-6% मेंथोफ्यूरोन प्राप्त होता है। इस यौगिक का उपयोग सौंदर्य प्रसाधन, सुगंधकारी और औषध उद्योग में होता है। **सिम-इंडस** से एक वर्ष में दो फसलों में लगभग 72 किग्रा. तेल का उत्पादन होता है जिसमें 27% मेंथोफ्यूरोन अंश और लगभग 15% पुलीगॉन अंश होता है। एक अन्य उच्च मेंथोफ्यूरोन युक्त पुदीने का जीनोटाइप **सिम-पत्र** है, जिसे सीमैप ने विकसित किया है और यह व्यावसायिक उत्पादन के लिए एक आदर्श किस्म है।

इसी प्रकार, मेंथा की किस्म, **अनन्त कार्बोमिंट** में कार्बोन प्रचुर मात्रा में होता है जो एक सगंध तेल है। पिपरमिंट की मधुर सुगंध वाली एक अन्य किस्म (**मेंथा पाइपेरिता**) जिसे **सिम-मधुरस** का नाम दिया गया है, औषधीय, चिकित्सीय और पेय गुणों से युक्त अभिलाक्षणिक सगंध तेल, उत्पन्न करती है। **सिम-मधुरस** के एक मूल्यांकन परीक्षण में, एक वर्ष में प्रति हेक्टेयर दो फसलों के आंकड़ों के आधार पर अनुमानित तेल की प्राप्ति 107 किग्रा. देखी गई।

एस एंड टी हस्तक्षेपों के जरिए ग्रामीण जनों के जीवन को छूने वाली, भारतीय किसानों द्वारा पुदीने की बेहतर किस्मों की खेती की कहानी, निस्संदेह यह सिद्ध करती है कि सीएसआईआर-800 पहल ग्रामीण भारत में समान और व्यापक वृद्धि द्वारा परिवर्तन लाने के लिए निर्धारित है जो ग्रामीण जनों के सामाजिक-आर्थिक स्थिति के सुधार में परिलक्षित होती है।

मायो क्लीनिक तथा सीएसआईआर ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये



मायोक्लीनिक तथा सीएसआईआर, भारत ने अनुसंधान के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सहयोग के लिए एक औपचारिक समझौते पर हस्ताक्षर किये हैं। प्रो. रॉबर्ट रिज्जा, एमडी, मायो एकजीक्यूटिव डीन फॉर रिसर्च तथा प्रो. समीर के. ब्रह्मचारी, महानिदेशक, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर), भारत ने 12 अक्टूबर 2011 को हृदयरोग, रासायनिक जीवविज्ञान तथा अनुप्रयुक्त जीनोमिकी से सम्बन्धित औषधियों, उपकरणों तथा बायोमार्कर अध्ययन तथा मेटाबोलोमिक इनोवेशन जैसे विषयों पर परस्पर कार्य करने के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये हैं।

हमारी निरन्तर चर्चा तथा प्रारम्भिक सहयोग पर आधारित यह पहला उत्साहवर्धक तथा सकारात्मक कदम है रॉबर्ट रिज्जा, एम.डी, मायो एकजीक्यूटिव डीन फॉर रिसर्च ने कहा। **हम सब को नवीनतम स्वास्थ्य सुविधाएं देने के लिए**

अपने भारतीय सहकर्मियों के साथ कार्य करने की आशा करते हैं। हम मायो क्लीनिक के साथ इस नये सम्बन्ध का स्वागत करते हैं जिसमें हम औषधि तथा प्रौद्योगिकी अनुसंधान तथा कम लागत में स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान करने के सशक्त क्षेत्रों में मिलकर कार्य करेंगे प्रो. समीर के. ब्रह्मचारी, महानिदेशक, सीएसआईआर ने कहा।

हम बेहतरीन दिमाग जो हमारे अनुसंधान दल को रोग का मूल समझने तथा हमारे रोगियों के लिए नवीन और अधिक प्रभावी उपचार विकसित करने में सहायता करेंगे, को इस कार्य में लगा रहे हैं एरिक वाइबेन, पीएच डी, मायो एसोसिएट डीन फॉर एक्स्टर्नल कोलेबोरेशन ने कहा। सीएसआईआर, भारत के साथ ऐसे सामरिक महत्व के अन्तरराष्ट्रीय अनुसंधान सहयोग करने से हमें इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता मिलेगी।

एसीएस शोध पत्रिकाओं के सम्पादकों ने एनसीएल, पुणे का दौरा किया

डॉ. डेविड व्हाइटने, प्रमुख संपादक, लैंगमुर, डॉ. अनिर्बान महापात्रा, एक्वीजिशन सम्पादक, एसीएस जर्नल पब्लिशिंग, मिहेला रॉजर्स, समन्वयक सम्पादक, क्रिस्टल ग्रोथ एंड डिजाइन और रॉबिन डी रॉजर्स, प्रमुख सम्पादक, क्रिस्टल ग्रोथ एंड डिजाइन, लैंगमुर ने वैज्ञानिकों और विद्यार्थियों से बात करने के उद्देश्य से हाल ही में राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (एनसीएल), पुणे का दौरा किया।



रॉबिन डी-रॉजर्स, क्रिस्टल ग्रोथ एंड डिजाइन के प्रमुख सम्पादक, प्रस्तुतिकरण देते हुए

अमेरिकन कैमिकल सोसायटी (एसीएस) ने भारत में रसायन विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान गतिविधियों में बहुत रुचि दिखायी है। यह गर्व का विषय है कि एसीएस के संपादकों ने आईआईएससी, बेंगलुरु, जेएनसीएसआर और एनसीबीएस के अलावा एनसीएल को दौरे के लिए चुना। ऐसा भारत विशेष रूप से सीएसआईआर में रसायन विज्ञान में चल रही अनुसंधानिक गतिविधियों में एसीएस की रुचि के कारण है। एसीएस के सम्पादक विशेष रूप से एनसीएल के विषय में अधिक जानना चाहते थे क्योंकि एसीएस में बड़ी मात्रा में प्रकाशन के लिए विशाल उच्च इम्पैक्ट प्रकाशन एनसीएल से ही आते हैं। इन सम्पादकीय आउटरीच के एक भाग के रूप में, अमेरिकन कैमिकल सोसाइटी की ओर से, सम्पादक मंडल ने एनसीएल के वैज्ञानिकों और शोध छात्रों से बात की। उन्हें आशा थी कि अन्तरराष्ट्रीय रसायन विज्ञान वर्ष के दौरान उनका प्रारम्भिक दौरा, आने वाले वर्षों में बड़े पैमाने पर आउटरीच गतिविधियों के लिए बड़ी संख्या में एसीएस सम्पादकों के दौरे के लिए रास्ता बनाएगा।

एसीएस के सम्पादकों ने एनसीएल के वैज्ञानिकों, आईआईएसआईआर और पुणे विश्वविद्यालय, पुणे के प्राध्यापकों से बात की। डॉ. सौरव पाल, निदेशक, एनसीएल ने

सीएसआईआर, विशेष रूप से एनसीएल की वैज्ञानिक उपलब्धियों का संक्षिप्त विवरण दिया। उन्होंने एसीएसआईआर और आईआईएसआईआर, पुणे और पुणे विश्वविद्यालय सहित अनेक प्रमुख संस्थानों के साथ एनसीएल के सहयोग की चर्चा की। एसीएस की टीम ने विभिन्न वैज्ञानिक पक्षों पर डॉ. सौरव पाल, प्रो. के. एन. गणेश, निदेशक, आईआईएसआईआर, पुणे तथा अन्य वैज्ञानिकों से चर्चा की।

डॉ. डेविड व्हाइटने, प्रमुख संपादक, लैंगमुर, डॉ. अनिरबान महापात्रा, एक्वीजिशन सम्पादक, एसीएस जर्नल पब्लिशिंग, और राबिन डी रॉजर्स, क्रिस्टल ग्रोथ एंड डिजाइन के प्रमुख सम्पादक ने बड़ी संख्या में उपस्थित वैज्ञानिकों और प्राध्यापकों के सम्मुख विभिन्न विषयों जैसे: एसीएस कौन है? एसीएस पत्रिकाएं क्या हैं? एसीएस सम्पादक कौन हैं? उनके भारत आने का उद्देश्य क्या है? एसीएस पत्रिका में प्रकाशन क्यों कराएं? एसीएस के सम्पादक शोधपत्रों में क्या देखते हैं? एक सम्पादक किन नैतिक निर्देशों का अनुसरण करता है? एक लेखक को किन नैतिक निर्देशों का अनुसरण करना चाहिए? एक समीक्षक को किन नैतिक निर्देशों का अनुसरण करना चाहिए? पर प्रस्तुतिकरण

प्रो. समीर के. ब्रह्मचारी ओ.पी. भसीन अवार्ड से सम्मानित

प्रो. समीर के. ब्रह्मचारी, महानिदेशक, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद को इंडिया इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली में दिनांक 15 नवम्बर 2011 को आयोजित एक समारोह में भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री एम. हामिद अंसारी के करकमलों द्वारा ओमप्रकाश भसीन अवार्ड फॉर साइंस एंड टेक्नोलॉजी से सम्मानित किया गया।



श्री ओमप्रकाश भसीन फाउंडेशन फॉर साइंस एंड टेक्नोलॉजी द्वारा संस्थापित यह पुरस्कार वर्ष 2008-09 के लिए प्रो. ब्रह्मचारी को जैवप्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान तथा अतुलनीय नेतृत्व को मान्यता देने के लिए दिया गया है।

दिया। उन्होंने बताया कि अब एसीएस मोबाइल फोन पर उपलब्ध है। एसीएस सम्पादकों ने, एसीएस पत्रिकाओं में प्रकाशित कराने वाले लेखकों के अनुभवों पर फीडबैक एकत्रित किया और अन्य स्टाफ और सम्पादकों के साथ उसे बांटा। उन्होंने एसीएस पत्रिकाओं में प्रकाशित कराने वाले शोधकर्ताओं के अनुभवों को भी इकट्ठा किया और वे लेखक और समीक्षक के अनुभवों को बेहतर बनाने के लिए क्या कर सकते हैं।

एसीएस की टीम ने पॉलीमर एंड एडवान्स्ड मैटिरियल्स रिसर्च लैबोरेट्री (पीएएमएल), एनसीएल वेंचर सेंटर एंड आईआईएसआईआर का भी दौरा किया। वे सौर ऊर्जा और फ्यूल सैल के क्षेत्र में हुए शोध से भी प्रभावित थे।

सीएसआईआर-राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान लखनऊ में गुलदाउदी और कोलियस प्रदर्शनी

सीएसआईआर-राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, लखनऊ द्वारा गुलदाउदी एवं कोलियस की दो दिवसीय प्रदर्शनी संस्थान के सेन्ट्रल लॉन में आयोजित की गयी। अपनी अनुपम छटा बिखेरते हुये रंग-बिरंगे वातावरण में फूलों की छटा देखने लायक थी। इस प्रदर्शनी में कुल 107 प्रदर्शकों से 831 प्रविष्टियाँ प्राप्त हुई हैं। इस वर्ष विषयवस्तु अनुभाग के अन्तर्गत कुछ आकर्षक शीर्षक इस प्रकार थे:- बालश्रम पथरीली बगिया में खिलता बचपन, जग में सुन्दर हैं दो नाम चाहे कृष्ण कहो या राम तथा मैं जिन्दगी का साथ निभाता चला गया इत्यादि। इस प्रदर्शनी के आयोजन का प्रमुख उद्देश्य पुष्पकृषि उद्योग को बढ़ावा देना तथा जनसाधारण में पुष्पकृषि के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना है। यह एक दुर्लभ अवसर है जबकि लोगों ने फूलों के विविध रंगों, प्रकारों, आकारों तथा उनके संवर्धित पद्धतियों के प्रभाव को देखा।

इस वर्ष सीएसआईआर-एनबीआरआई ने गुलदाउदी की एक नई प्रजाति प्रदर्शित की जिसको संस्थान के भूतपूर्व निदेशक, डॉ. पी. पुष्पांगदन के सम्मान में, एनबीआरआई-पुष्पांगदन नाम दिया गया। इस नई प्रजाति को संस्थान के निदेशक, डॉ. चन्द्रशेखर नौटियाल ने विमोचित किया। सीएसआईआर-एनबीआरआई ने गुलदाउदी एवं कोलियस के अधिकतर सभी रंगों



प्रमुख प्रदर्शकों की झलकियां

तथा प्रकारों के 220 से अधिक जर्मप्लाज्म संग्रह अनुरक्षित किये हैं। इस प्रदर्शनी में गुलदाउदी एवं कोलियस की विविध प्रजातियों का प्रदर्शन किया गया है। संस्थान के निदेशक, डॉ. चन्द्र शेखर नौटियाल ने गुलदाउदी के

प्रदर्शन के साथ-साथ उनकी अनुसंधान प्रक्रियाओं पर भी प्रकाश डाला। इसके अतिरिक्त, संस्थान ने गुलदाउदी एवं कोलियस की पारंपरिक तथा आधुनिक विधियों के माध्यम से विकसित नई किस्मों के साथ



प्रदर्शनी के विजेतागण



एनबीआरआई-पुष्पांगदन



हाल ही में संग्रहीत जर्मप्लाज्म का प्रदर्शन भी किया। जनसाधारण को संस्थान के वैज्ञानिकों (गुलदाउदी पर कार्यरत) के साथ प्रत्यक्ष रूप से बातचीत के सुअवसर प्रदान किये गए तथा कोलियस एवं गुलदाउदी की कृषि प्रौद्योगिकी, टैक्नो-इकोनॉमिक्स, व्यावसायिक कटफ्लावर किस्मों तथा अन्य संवर्धित पद्धतियों के प्रभाव को भी प्रदर्शित किया गया।

प्रदर्शनी के समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्री आलोक रंजन, कृषि उत्पादन आयुक्त, उत्तरप्रदेश, लखनऊ तथा विशिष्ट अतिथि श्री जे. एन. चैम्बर, प्रमुख सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उत्तरप्रदेश, लखनऊ थे। इस वर्ष 22 रनिंग चैलेंज कप/ शीलड/ट्राफियाँ के अलावा 332 पुरस्कार (99 प्रथम, 97 द्वितीय एवं 136 सांत्वना) मुख्य अतिथि तथा विशिष्ट अतिथि द्वारा

सफल प्रतियोगियों को वितरित किए गये।

इस प्रदर्शनी में हेडक्वार्टर, सेण्ट्रल कमाण्ड कैण्ट, लखनऊ ने कुल 6 कप/ शीलड/ट्राफियाँ तथा श्री एस.के. शर्मा, सीको केबिल, ऐशबाग, लखनऊ, श्री उमाशंकर साहू, गोमती नगर, लखनऊ एवं कुमारी रंजीता अग्रवाल, मदन मोहन मालवीय मार्ग, लखनऊ ने दो-दो टॉफियाँ जीतीं। विजयी प्रतिभागियों का विवरण निम्नवत है:-

हेडक्वार्टर, सेण्ट्रल कमाण्ड

- नबी मोहम्मद रनिंग चैलेंज कप - उच्चतम अंक प्राप्तकर्ता को वर्ग ए-1 से कैण्ट, लखनऊ ए-3 में प्रदान करने के लिए
- इंडियन एक्सप्लोसिव्स लिमिटेड (फर्टिलाइजर डिवीजन) रनिंग ट्राफी - गुलदाउदी केनमूने वाले गमलों, डी-1 - डी- 24 में उच्चतम अंक प्राप्तकर्ता के लिए
- जी.ओ.सी. - इन-सी., सेंट्रल कमाण्ड रनिंग चैलेंज कप - नमूने वाले कोलियस पौधों, डी 42 - डी-50 में उच्चतम अंक प्राप्त करने के लिए
- श्रीमती माधुरी राय चैलेंज शीलड - गुलदाउदी के दो नमूनेदार गमलों के एवं सैट के लिए, इन दो गमलों में, एक में छोटे फूल वाली और दूसरे में बड़े फूल वाली गुलदाउदी के पौधे लगे हों, जिन्हें सेन रिनत्सुकुरी तथा कैस्केड रूप के अलावा किसी अन्य आकर्षक ढंग से साधा गया हो
- श्रीमती कुमुद रस्तोगी मेमोरियल रनिंग चैलेंज ट्राफी - प्रदर्शनी के सर्वोत्तम कोलियस पौधे के नमूने वाले गमले के लिए
- विक्रमजीत सिंह रनिंग कप प्रदर्शनी में उच्चतम अंक प्राप्तकर्ता को प्रदान करने के लिए

श्री एस. के. शर्मा, सीको केबिल ऐशबाग, लखनऊ

- रणजीत सिंह मेमोरियल ट्राफी - प्रदर्शनी के राजा के लिए (बड़े फूल वाली गुलदाउदी का एक नमूनेदार गमला, जिसमें एक पौधे में एक फूल हो)
- श्रीमती कृष्णा देवी मेमोरियल रनिंग ट्राफी - स्पाइडर टाइप में बड़े फूलों वाली गुलदाउदी की विभिन्न किस्मों के चार गमलों के संग्रह के लिए

श्री उमाशंकर साहू, विराम खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ

- सावित्री देवी मेमोरियल चैलेंज ट्राफी - वर्ग सी-1 में बड़े फूल वाली गुलदाउदी की 12 विभिन्न किस्मों के 12 गमलों के लिए
- काज़ी सैयद मसूद हसन रनिंग चैलेंज ट्राफी - प्रदर्शनी के राजकुमार के लिए (स्पाइडर गुलदाउदी का एक नमूनेदार गमला, जिसके एक पौधे में एक फूल हो)

कुमारी रंजीता अग्रवाल, मदन मोहन मालवीय मार्ग, लखनऊ

- परसी-लंकास्टर चैलेंज कप - कोरियन टाइप गुलदाउदी की विभिन्न किस्मों के 9 गमलों के संग्रह के लिए
- श्रीमती रणजीत सिंह मेमोरियल ट्राफी - प्रदर्शनी की रानी के लिए (छोटे फूल वाली गुलदाउदी का एक नमूनेदार गमला)



सीएसआईआर समाचार

मण्डल रेल प्रबन्धक, उत्तर रेलवे, लखनऊ	• एम.वाई. खान रनिंग चैलेंज ट्राफी - उच्चतम अंक प्राप्तकर्ता को वर्ग 7 से ए-9 में प्रदान करने के लिए
ले. जनरल पी. जी. कामथ, थिमैया रोड, लखनऊ	• मोहम्मद मलिक मेमोरियल रनिंग चैलेंज ट्राफी - वर्ग सी-2 में बड़े फूल वाली गुलदाउदी की 6 विभिन्न किस्मों के 6 गमलों के लिए
मेजर जनरल गुरदीप सिंह, सेण्ट्रल कमाण्ड कैण्ट, लखनऊ	• श्री गोविन्द प्रसाद मेमोरियल चैलेंज ट्राफी - वर्ग सी-4 में छोटे फूल वाली हेडक्वार्टर, गुलदाउदी की 12 विभिन्न किस्मों के 12 गमलों के लिए
हिण्डालको इण्डस्ट्रीज लि. रेनूकूट, सोनभद्र उ.प्र.	• बेगम सईदा खातून रनिंग चैलेंज ट्राफी - बड़े फूल वाली गुलदाउदी के नमूने वाले कट फ्लावर वर्ग-डी (डी-25 - डी-31) में उच्चतम अंक प्राप्त करने के लिए
श्रीमती मिथलेश गुप्ता, विराम खण्ड गोमती नगर, लखनऊ	• राम किशोर शर्मा मेमोरियल ट्राफी - इस वर्ष के पुष्प कोका सुजान के लिए (बड़े फूल वाली गुलदाउदी का एक नमूने वाला गमला जिसमें एक पौधे में एक ही पुष्प हो)
श्री कुलदीप मेहरा, मदन मोहन मालवीय मार्ग, लखनऊ	• महबूब अली मेमोरियल रनिंग चैलेंज ट्राफी - अंतर्वक्र टाइप बड़े फूल वाली गुलदाउदी की विभिन्न किस्मों के 6 गमलों के संग्रह के लिए
श्रीमती कविता मेहरा, मदन मोहन मालवीय मार्ग, लखनऊ	• सैयद शहीर हसन मेमोरियल रनिंग चैलेंज कप - प्रदर्शनी के सर्वोत्तम बड़ी फूल वाली गुलदाउदी (बहिर्वलित) पौधे के नमूने वाले गमले के लिए
श्री दिनेश चन्द्र मिश्र, हुसैनगंज, लखनऊ	• काज़ी सैयद हसन मेमोरियल रनिंग चैलेंज ट्राफी - वर्ग-एफ में उच्चतम अंक प्राप्त करने के लिए
एच. ए. एल. उपसाधन मण्डल, लखनऊ	• महफूज़ अली मेमोरियल रनिंग चैलेंज ट्राफी - केवल छोटे फूल वाली गुलदाउदी (3 मीटर व्यास) के कलात्मक समूह के लिए
निदेशक सीमैप, लखनऊ	• आर.वी. सिथोले मेमोरियल रनिंग चैलेंज कप - कोलियस (3 मीटर व्यास) के कलात्मक समूह के लिए

इसके अतिरिक्त दिए गए पुरस्कारों में हेड क्वार्टर सेन्ट्रल कमाण्ड, कैण्ट, लखनऊ ने कुल 31 पुरस्कार (13 प्रथम, 7 द्वितीय तथा 11 सान्त्वना) जीतकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। एच.ए.एल. उपसाधन मण्डल,

लखनऊ ने कुल 25 पुरस्कार (5 प्रथम, 8 द्वितीय तथा 12 सान्त्वना) तथा श्री विनोद कुमार यादव, मण्डल रेल प्रबन्धक, लखनऊ कुल 15 पुरस्कार (4 प्रथम, 5 द्वितीय तथा 6 सान्त्वना) जीतकर क्रमशः द्वितीय एवं

तृतीय स्थान पर रहे।

पुरस्कार वितरण समारोह के प्रारम्भ में संस्थान के निदेशक, डॉ. चन्द्र शेखर नौटियाल ने मुख्य अतिथि तथा सम्मानित अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि संस्थान ने

लगभग 2.7 करोड़ हेक्टेयर क्षेत्र पर जैव उर्वरक एवं जैव कीटनाशकों का प्रयोग किया है जिससे लगभग ₹ 110 करोड़ मूल्य के रासायनिक खादों की बचत हुई है तथा फसल की उत्पादकता में 15 से 30 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गयी है। एनबीआरआई पिछले 25 वर्षों से गुलदाउदी के जर्मप्लाज्म संग्रह, नई किस्मों के विकास, तकनीकी सलाह प्रदान करके प्रशिक्षण कार्यक्रमों के आयोजनों तथा रोपण सामग्री प्रदान करके इसकी लोकप्रियता बढ़ाने का काम कर रहा है।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री आलोक रंजन, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. लखनऊ ने एनबीआरआई द्वारा उद्यान कृषि के क्षेत्र में किये जा रहे प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि कृषकों के लाभ के लिए एनबीआरआई में पुष्प कृषि के क्षेत्र में किये जा रहे अनुसंधान कार्य काफी महत्वपूर्ण हैं। विशिष्ट अतिथि श्री जे. एन. चैम्बर ने कहा कि संस्थान द्वारा पुष्प कृषि के क्षेत्र में किये जा रहे प्रयासों का बहुत ही महत्वपूर्ण सामाजिक मूल्य है तथा यह ग्रामीण कृषकों को जीविकोपार्जन का महत्वपूर्ण आधार उपलब्ध करा रहा है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस तरह के आयोजन कृषकों को पुष्प कृषि हेतु प्रेरित करने में सक्रिय भूमिका निभायेंगे।

सीरी, पिलानी में सीएसआईआर का युवाओं के लिए विज्ञान में नेतृत्व कार्यक्रम (सीपीवाईएलएस-2011)

केन्द्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीरी), पिलानी द्वारा 28-29 नवंबर 2011 को दो दिवसीय सीएसआईआर का युवाओं के लिए विज्ञान में नेतृत्व कार्यक्रम (सीपीवाईएलएस) का उद्घाटन समारोह संस्थान के मुख्य सभागार में आयोजित किया गया। इस प्रतिष्ठित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. चंद्रशेखर, निदेशक, सीरी, पिलानी थे। इस कार्यक्रम में राजस्थान राज्य के सीबीएसई, आइसीएसई तथा राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर के दसवीं कक्षा के 51 मेधावी विद्यार्थी सम्मिलित हुए।

समारोह का शुभारंभ सरस्वती वंदना एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। अपने संक्षिप्त उद्बोधन में संस्थान के निदेशक डॉ. चंद्रशेखर ने इस अवसर पर अतिथियों, प्रतिभागियों तथा उनके अभिभावकों का स्वागत करते हुए कहा कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य नई पीढ़ी में विज्ञान के प्रति जागरूकता पैदा करना है। उन्होंने इस कार्यक्रम की उपयोगिता, आवश्यकता एवं महत्व की जानकारी देते हुए कहा कि विज्ञान ही वह प्रभावी कार्य क्षेत्र है जिसने हमारे प्राकृतिक जीवन को सुखी और समृद्ध बनाया है।

इस अवसर पर मेधावी विद्यार्थियों को सफलता प्राप्त करने का सूत्र बताते हुए उन्होंने कहा कि हमारी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि हमने अपना कार्य पूरे समर्पण भाव के साथ अपनी पूरी



प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए डॉ. चंद्रशेखर

शक्ति के साथ अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है या नहीं। उन्होंने मेधावी विद्यार्थियों का आह्वान करते हुए कहा कि इस दुर्लभ अवसर का लाभ उठाएँ। इस अवसर पर उन्होंने अभिभावकों का आवाहन करते हुए कहा कि वे अपने मेधावी बच्चों को अपना रास्ता स्वयं तलाशने की आजादी दें तथा किसी भी सूरत में उन पर अपनी महत्वाकांक्षाओं का बोझ न डालें।

कार्यक्रम में विशेष आमंत्रित अतिथि प्रोफेसर



विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए प्रो. राम आचार



सीएसआईआर समाचार

राम आचार, इलेक्ट्रॉनिक एवं संचार विभाग, कार्लटन विश्वविद्यालय, कनाडा, ने इन मेधावी छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि वे राष्ट्र का एक सुखद स्वप्न है तथा भावी राष्ट्र का निर्माण करने में अहम भूमिका निभाएंगे, इसलिए इस अवसर का सदुपयोग करें क्योंकि आप लोग सौभाग्यशाली हैं कि आपके पास वह समस्त साधन एसं सूचनाएँ उपलब्ध हैं जिनसे आप अपने प्रयासों को विज्ञान एवं इंजीनियरी विषयों की ओर केंद्रित कर सकते हैं। अंत में उन्होंने विद्यार्थियों से इस अवसर का लाभ उठाने का आह्वान किया तथा उन्हें स्वर्णिम भविष्य के लिए आशीर्वाद दिया।

इससे पूर्व संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक श्री राहुल वर्मा ने सभी प्रतिभागियों व उनके अभिभावकों का स्वागत किया। उद्घाटन सत्र के आरंभ में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ जी इरन्ना ने कार्यक्रम की उपयोगिता, आवश्यकता एवं महत्व की जानकारी देते हुए इसकी संक्षिप्त रूपरेखा पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के दौरान संक्षिप्त परिचय सत्र में सभी विद्यार्थियों ने अपना परिचय देते हुए अपने-अपने लक्ष्यों से अवगत कराया।

उद्घाटन समारोह के अंत में कार्यक्रम के समन्वयक डॉ एन के स्वामी ने सभी अतिथियों, आमंत्रित विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों तथा इस कार्यक्रम से जुड़े सभी सहकर्मियों के प्रति आभार व्यक्त किया। उद्घाटन सत्र का समापन राष्ट्र गान के साथ हुआ।

इस दो दिवसीय कार्यक्रम में प्रतिभागी विद्यार्थियों के लिए व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न विषय विशेषज्ञों द्वारा निम्नलिखित व्याख्यान दिए गए - आर्टिफिशियल सेन्सिंग सिस्टम्स, डॉ पी सी पंचारिया; प्लाज़्मा : साइंस एंड टेक्नोलॉजी फॉर 21 सेन्चुरी, श्री नीरज कुमार; जर्नी : सैन्ड टु सुपर कंप्यूटर, श्री दीपक बंसल; फ्रंटियर्स ऑफ फ़िज़िक्स,

प्रो. एस एन कर्बेल्कर; ऑल्टरनेटिव करियर ऑप्शंस इन साइंस : फाइंड यू आर फिट, प्रो. एन एम वी राव; माइक्रोवेवज़ एंड देयर एप्लिकेशन्स, डॉ अयन बंधोपाध्याय; वंडर वर्ल्ड ऑफ सेमिकंडक्टर्स एंड इंटीग्रेटेड सर्किट्स, डॉ जी इरन्ना।

इन व्याख्यानों के उपरांत विद्यार्थियों को संस्थान की विभिन्न प्रयोगशालाओं का परिदर्शन कराया गया जिसमें विद्यार्थी प्रतिभागियों ने उपकरणों व मशीनों के विषय में प्रश्न पूछ कर अपनी जिज्ञासाओं को शांत किया। इस दौरान इन विद्यार्थियों ने संस्थान के वैज्ञानिकों से खुल कर चर्चा की। इससे पूर्व उद्घाटन सत्र के आरंभ में सभी प्रतिभागियों को सीरी व सीएसआईआर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि व उपलब्धियों पर एक फिल्म भी दिखाई गई। कार्यक्रम के दौरान उन्हें बिरला विज्ञान संग्रहालय का परिदर्शन भी कराया गया।

इसके अतिरिक्त सीपीवाईएलएस के प्रतिभागियों के



आयोजन की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए डॉ. जी. इरन्ना



प्रतिभागिता प्रमाण पत्र व स्मृति चिह्न भेंट करते हुए डॉ. चंद्रशेखर, निदेशक, सीरी



निदेशक महोदय के साथ सीपीवाईएलएस 2011 के सभी प्रतिभागी

मनोरंजन के लिए संस्थान के मुख्य सभागार में एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के बाद श्रीमती शोभा वर्मा ने सभी प्रतिभागियों को स्मृति चिह्न भेंट किए। सांस्कृतिक कार्यक्रम का संचालन सुश्री विनोदिनी किशोर ने किया।

इस दो दिवसीय कार्यक्रम का समापन 29 नवंबर 2011 को हुआ। समापन सत्र में संस्थान के निदेशक डॉ. चंद्रशेखर ने सभी प्रतिभागी छात्रों को प्रतिभागिता प्रमाण पत्र, समूह फोटोग्राफ तथा स्मृति चिह्न भेंट किए। इस अवसर पर उन्होंने सभी विद्यार्थियों को बोर्ड परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए बधाई दी।

उन्होंने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि हमें असफलताओं से निराश नहीं होना चाहिए और अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए निरंतर प्रयासरत रहना चाहिए। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को कहा कि इस कार्यक्रम के बाद भी वे प्रशिक्षण, परियोजना कार्यों व भ्रमण आदि के लिए संस्थान में आमंत्रित हैं और संस्थान की ओर से इस दिशा में सहयोग का आश्वासन दिया। अंत में उन्होंने सभी प्रतिभागियों को स्वर्णिम भविष्य के लिए शुभकामना दी।

इससे पूर्व विद्यार्थियों व उनके अभिभावकों ने इस कार्यक्रम के बारे में अपने विचार व्यक्त किए तथा एकमत होकर इस कार्यक्रम की प्रशंसा की। इस कार्यक्रम की अवधि बढ़ाने का सुझाव देते हुए उन्होंने अपेक्षा की कि यह कार्यक्रम भविष्य में भी नियमित रूप से आयोजित किया जाएगा जिससे विद्यार्थियों को उचित मार्गदर्शन मिले और संस्थान में विशेषज्ञों से चर्चा का अवसर प्राप्त हो।

समापन सत्र का संचालन श्री विषांत द्विवेदी, वैज्ञानिक ने किया। उन्होंने सत्र के अध्यक्ष, कार्यक्रम के समन्वयक, सभागार में उपस्थित अधिकारियों, सभी प्रतिभागियों,

डॉ. श्री कृष्ण राज, प्रमुख वैज्ञानिक, सीएसआईआर-राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, विज्ञान रत्न सम्मान से अलंकृत



उत्तर प्रदेश सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग ने डॉ. श्री कृष्ण राज, प्रमुख वैज्ञानिक, एनबीआरआई, लखनऊ को वर्ष 2010-11 के लिए विज्ञान रत्न सम्मान से सम्मानित किया है। डॉ. श्री कृष्ण राज, प्रमुख वैज्ञानिक का जन्म उत्तरप्रदेश के एक छोटे से शहर में हुआ था। उन्होंने कानपुर विश्वविद्यालय से पीएचडी की उपाधि वनस्पति विज्ञान में प्राप्त की। डॉ. राज ने वर्ष 1986 से सीएसआईआर-राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान में वैज्ञानिक-बी के पद पर विषाणु विज्ञान प्रयोगशाला में कार्यभार ग्रहण किया तथा तब से अब तक अनेक रोग कारकों की पहचान कर चुके हैं। डॉ. राज मुख्य रूप से विषाणुओं की जैव प्रौद्योगिकी के माध्यम से पहचान के लिये जाने जाते हैं तथा पुष्प कृषि में योगदान के लिए उन्हें विज्ञान रत्न सम्मान से अलंकृत किया गया।

अभिभावकों व सहकर्मियों का स्वागत किया तथा इस तीन दिवसीय कार्यक्रम के दौरान आयोजित विभिन्न गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का समापन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ जी इरन्ना द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ। उन्होंने प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से संस्थान में आए प्रतिभागियों व

उनके अभिभावकों को संस्थान के आमंत्रण पर कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए आभार व्यक्त किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने संपूर्ण आयोजन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग करने वाले सहकर्मियों को धन्यवाद दिया।

इस प्रकार संस्थान में यह दो दिवसीय कार्यक्रम संपन्न हुआ।

सीएसआईआर-राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. चन्द्रशेखर नौटियाल विज्ञान गौरव सम्मान से अलंकृत



उत्तर प्रदेश सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग ने डॉ. चन्द्रशेखर नौटियाल, निदेशक, एनबीआरआई, लखनऊ को उनके समाज व ग्रामीण वर्ग की सेवा हेतु किये गये अनुसन्धान को प्रदेश का गौरव मानते हुए वर्ष 2010-11 के विज्ञान गौरव सम्मान से अलंकृत किया है। डॉ. चन्द्रशेखर नौटियाल का जन्म 26 मई 1956 को हुआ था तथा उत्तरप्रदेश से अपनी शिक्षा प्राप्त कर उन्होंने पीएचडी की उपाधि प्रोफेसर मोदी के निर्देशन में बड़ौदा विश्वविद्यालय से प्राप्त की। डॉ. नौटियाल उसके बाद विशेष प्रशिक्षण हेतु कनाडा चले गये। तदोपरांत उन्होंने 10 वर्ष तक एक जैव प्रौद्योगिकी कम्पनी में प्रबन्धक के रूप में कार्य किया। वर्ष 1982 में डॉ. नौटियाल ने संस्थान में वैज्ञानिक ई-1 के

पद पर अनुसन्धान कार्य प्रारम्भ किया। प्रारम्भ से ही डॉ. नौटियाल समाज और गांव के लिये कुछ करना चाहते थे इसलिए इसी दिशा में कार्य करते हुए उन्होंने जैव उर्वरक एवं जैव नियंत्रकों की खोज से सम्बन्धित कार्य प्रारम्भ किया और पौधों के मूल परिवेश से जीवाणुओं को निष्कर्षित कर उनका व्यवसायिक उत्पादन प्रारम्भ किया। उनके चने के फ्यूजेरियम जनित रोग के नियंत्रण सम्बन्धी कार्य को विदेशी अनुसन्धान पत्रिका के मुख पृष्ठ पर प्रकाशित किया गया। इसके अतिरिक्त संकटग्रस्त परिस्थितियों में उपजने वाले जीवाणुओं पर किया गया कार्य भी विशेष प्रशंसनीय रहा है। डॉ. नौटियाल को इन कार्यों हेतु अनेकों पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

सीरी, पिलानी में सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

केन्द्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान(सीरी), पिलानी, में 26 सितंबर 2011 को सीएसआईआर के 69वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में एक समारोह आयोजित किया गया जिसमें संस्थान के पूर्व वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ एस के भटनागर मुख्य अतिथि तथा पूर्व वरिष्ठ वैज्ञानिक श्री एस एम शर्मा विशिष्ट अतिथि थे। संस्थान के मुख्य सभागार में आयोजित इस समारोह में संस्थान के सेवानिवृत्त वैज्ञानिकों व सहकर्मियों तथा पत्रकारों के अतिरिक्त पिलानी के विभिन्न संस्थानों के प्रतिनिधि भी सम्मिलित हुए।

समारोह का शुभारंभ मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि द्वारा दीप प्रज्वलन से हुआ। तदुपरांत सीरी विद्या मंदिर की छात्राओं द्वारा सरस्वती वंदना प्रस्तुत की गई।

इसके उपरांत संस्थान के निदेशक डॉ. चंद्रशेखर ने परिषद के गठन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं इसमें परिषद के संस्थापक डॉ शांतिस्वरूप भटनागर के योगदान की विस्तृत चर्चा की। उन्होंने कहा कि आज हम सभी सीरी तथा अन्य संबद्ध प्रयोगशालाओं/संस्थानों के मुख्यालय सीएसआईआर का 69वाँ स्थापना दिवस मनाने के लिए यहाँ एकत्र हुए हैं। स्वतंत्र भारत में सीएसआईआर ही ऐसा शोध संगठन है जोकि देश के अन्य शोध संगठनों का जनक है। देश के अत्याधुनिक शोध संगठनों की नींव सीएसआईआर द्वारा ही रखी गई थी।

उन्होंने सीएसआईआर की उपलब्धियों के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि सीएसआईआर ने जहाँ एक ओर उच्च



सीएसआईआर की उपलब्धियों का विवरण प्रस्तुत करते हुए निदेशक महोदय

तकनीकी शोध कार्य किया है वहीं दूसरी ओर आम जनता से जुड़े कार्यों को भी सफलतापूर्वक पूर्ण किया है। इस अवसर पर उन्होंने परिषद की देश व्यापी प्रयोगशालाओं के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि वर्तमान में परिषद मुख्यालय तथा इसकी 37 प्रयोगशालाओं व केन्द्रों में लगभग 17500 कर्मचारी सेवारत हैं। उन्होंने कहा कि सीएसआईआर द्वारा वैज्ञानिक तथा नवीन अनुसंधान अकादमी (एकेडमी फॉर साइंटिफिक एंड इनोवेटिव रिसर्च) की स्थापना विगत वर्ष की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक है। इस संबंध में जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि यह विश्व स्तर का विश्वविद्यालय होगा जो देश में विशिष्ट क्षेत्रों में स्नातकोत्तर स्तर की शिक्षा प्रदान करेगा। परिषद की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने विगत वर्ष में सीएसआईआर द्वारा पूर्ण की गई प्रमुख परियोजनाओं की जानकारी दी। साथ ही उन्होंने देश के सभी मानक तथा संचार प्रणालियों, प्रतिरक्षा, अंतरिक्ष, परमाणु ऊर्जा, वांतरिक्ष इत्यादि के क्षेत्र में सीएसआईआर द्वारा अर्जित उपलब्धियों को भी रेखांकित किया। इस अवसर पर उन्होंने सीरी द्वारा

अर्जित प्रमुख उपलब्धियों की भी संक्षिप्त जानकारी दी।

इस अवसर पर उन्होंने उपस्थित जनसमुदाय को सभी शोध क्षेत्रों में सीएसआईआर द्वारा निजी क्षेत्र के सहयोग से पूरी की गई परियोजनाओं की जानकारी देते हुए बताया कि परिषद ने औषध

क्षेत्र को सुदृढ़ करने के लिए ओपन सोर्स ड्रग डिस्कवरी नामक कार्यक्रम का शुभारंभ किया है। उन्होंने देश में उपलब्ध परंपरागत ज्ञान को सूचीबद्ध करने के लिए परिषद द्वारा आरंभ की गई ट्रेडीशनल नॉलेज डिजिटल लाइब्रेरी का उल्लेख करते हुए कहा कि इसके अंतर्गत अब तक विभिन्न विषयों पर लगभग तीन करोड़ पृष्ठों की जानकारी संकलित की जा चुकी है और यह क्रम अनवरत रूप से जारी है। उन्होंने इस अवसर पर सीरी की विशिष्ट उपलब्धियों को भी रेखांकित किया। अपने उद्बोधन के अंत में उन्होंने सभी सहकर्मियों व उपस्थित लोगों को परिषद स्थापना दिवस की बधाई दी।

मुख्य अतिथि डॉ एस के भटनागर ने अपने संबोधन में संस्थान की प्रगति तथा उपलब्धियों पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि उन्हें यद्यपि आज संस्थान में अधिकांश चेहरे नए दिखाई दे रहे हैं फिर भी यहाँ आकर उन्हें अपनापन महसूस हुआ है क्योंकि वे भी किसी समय इस संस्थान का एक हिस्सा थे। इस अवसर पर उन्होंने अपने पुराने संस्मरण याद किए तथा उन्हें उपस्थित श्रोताओं से बाँटा। उन्होंने कहा संस्थान सहकर्मियों में अपनापन ही यहाँ की सबसे

बड़ी विशेषता है। मुख्य अतिथि डॉ एस के भटनागर ने इस अवसर पर संस्थान की वैज्ञानिक उपलब्धियों में सहयोग देने के लिए प्रशासन, वित्त, भंडार-क्रय, पुस्तकालय, कर्मशाला, इंजीनियरी सेवाएँ, सिविल आदि सभी सहायक सेवाओं में कार्यरत सभी सहकर्मियों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि उन्नति के लिए सभी सहकर्मियों में सामंजस्य व समन्वय की आवश्यकता है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि डॉ चंद्रशेखर जैसे गुणी व अनुभवी व्यक्ति के नेतृत्व में संस्थान का यह वातावरण न केवल इसी प्रकार सौहार्दपूर्ण बना रहेगा अपितु और बेहतर होगा। उन्होंने इस अवसर पर सभी सहकर्मियों को शुभकामनाएं एवं बधाई देते हुए आह्वान किया कि सभी सहकर्मी निष्ठापूर्वक अपने कर्तव्य का निर्वहन करेंगे ताकि यह संस्थान निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहे। उन्होंने इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. चंद्रशेखर एवं समस्त सीरी परिवार का उन्हें आमंत्रित करने के लिए आभार व्यक्त किया तथा संस्थान के सभी सहकर्मियों को पुनः परिषद स्थापना दिवस की बधाई दी।

इस अवसर पर अपने उद्बोधन में विशिष्ट अतिथि श्री एस एम शर्मा ने निदेशक महोदय तथा सीरी परिवार के प्रति आभार व्यक्त किया कि उन्होंने सपत्नीक आमंत्रित करके उन्हें गौरव प्रदान किया है।

अपने संक्षिप्त उद्बोधन में उन्होंने इस संस्थान में अपने अनुभवों तथा संस्मरणों के बारे में श्रोताओं को बताया। सीरी की कार्य संस्कृति और वातावरण की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि यहां सभी सहकर्मी किसी भी काम को अपना समझ कर करते हैं। उन्होंने सीएसआईआर व सीरी की प्रगति पर संतोष व्यक्त करते हुए सभी साथियों से प्रतिवर्ष अपने प्रदर्शन में सुधार करने तथा अपने व संस्थान की प्रगति में योगदान करने का आह्वान किया।



मुख्य अतिथीय उद्बोधन देते हुए डॉ. एस.के. भटनागर



विशिष्ट अतिथीय उद्बोधन देते हुए श्री एस.एम. शर्मा



सेवानिवृत्त सहकर्मियों को सम्मानित करते हुए मुख्य अतिथि



सहकर्मियों को सेवा सम्मान भेंट करते हुए विशिष्ट अतिथि

अंत में उन्होंने संस्थान सहकर्मियों को परिषद के 69वें स्थापना दिवस की हार्दिक बधाई दी।

इससे पूर्व इस अवसर पर मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि महोदय ने सीरी परिवार के सदस्यों को सेवा पुरस्कार – 1 सितंबर, 2010 से 31 अगस्त, 2011 तक सेवानिवृत्त हुए 12 सहकर्मियों को एक-एक कलाई घड़ी, शॉल एवं प्रशस्तिपत्र तथा संस्थान के 7 सहकर्मियों को 25 वर्ष की सेवा पूरी करने पर एक-एक कलाई घड़ी भेंट की।

इस अवसर पर श्रीमती रश्मि भटनागर व श्रीमती अरुणा शर्मा ने सीएसआईआर

स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया जिसके अंतर्गत 3 श्रेणियों में संस्थान सहकर्मियों के 12 बच्चों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

तदोपरांत निदेशक महोदय ने मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि को सीएसआईआर स्थापना दिवस का स्मृति चिह्न व शॉल तथा श्रीमती रंजना शर्मा ने श्रीमती रश्मि भटनागर व श्रीमती अरुणा शर्मा को शॉल भेंट कर सम्मानित किया।

इससे पूर्व कार्यक्रम का संचालन करते

हुए सुश्री सुनीता आर्य ने मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि एवं अन्य गणमान्य अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया। तदुपरांत उन्होंने उपस्थित श्रोताओं को मुख्य अतिथि तथा अध्यक्ष महोदय का संक्षिप्त परिचय दिया।

संस्थान के प्रमुख वैज्ञानिक श्री राहुल वर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन में मुख्य अतिथि तथा विशिष्ट अतिथि महोदय के प्रति आभार व्यक्त किया तथा इस आयोजन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग देने के लिए समस्त सहकर्मियों को धन्यवाद दिया। समारोह राष्ट्रगान के साथ सम्पन्न हुआ।



एनसीएल, पुणे में रसायन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के अगले दो दशक पर कार्यशाला

राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (एनसीएल), पुणे में दिनांक 23 सितम्बर 2011 को महाराष्ट्र विज्ञान अकादमी द्वारा एनसीएल एवं पुणे विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में **रसायन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के अगले दो दशक** नामक विषय पर एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। अन्तरराष्ट्रीय रसायनविज्ञान वर्ष 2011 के विषय को ध्यान में रखते हुए इस कार्यशाला का विषय **रसायन विज्ञान हमारा जीवन, हमारा भविष्य** रखा गया था।

कार्यशाला के आरम्भ में डॉ. एम.जी. कुलकर्णी एवं डॉ. सौरव पाल ने सभी उपस्थित जनों का स्वागत करते हुए 12 वीं पंचवार्षिक योजना के अनुरूप अनुसंधान को बनाए रखने हेतु विधा-आधारित अनुसंधान एवं आन्तर्विधा अनुसंधान करने का आह्वान किया। कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित एनसीएल के पूर्व निदेशक, डॉ. पॉल रत्नासामी ने भी प्रतिभागियों को सम्बोधित किया। अपने सम्बोधन में उन्होंने **जैव ईंधन प्रौद्योगिकी: हाल ही की प्रवृत्तियां** नामक विषय पर विचार प्रगट करते हुए ईंधन कार्यक्षमता को बढ़ाने तथा लागत को कम करने पर बल दिया।

प्रो. डब्ल्यू. एन. गाडे, निदेशक, बीयूसीडी, पुणे विश्वविद्यालय ने कार्यशाला में अपने विचार व्यक्त करते हुए वैज्ञानिकों की ओर से व्यापारिक स्तर के एकस्वों (पेटेण्ट) की आवश्यकता पर बल दिया और कहा कि शोधछात्रों में मौलिक विज्ञान के प्रति लगाव होना चाहिए।

उक्त कार्यशाला में प्रो. जी.डी. यादव, कुलपति, आईसीटी, मुम्बई ने प्रमुख व्याख्यान दिया। अपने व्याख्यान में उन्होंने सतत रूप से बनाए रखने की चुनौतियों का सामना

करने हेतु पर्यावरण-अनुकूल एवं सामाजिक स्तर पर स्वीकार्य प्रौद्योगिकी विकसित करने का आह्वान किया। उन्होंने वर्ष 2025 तक जीवाश्म ईंधन कई चरणों में बन्द होने तथा विश्व द्वारा वर्ष 2105 तक स्वच्छ एवं हरित प्रक्रिया पूरी तरह से अपनाने का अनुमान व्यक्त किया।

डॉ. राधाकृष्णन, अनुसंधान एवं विकास प्रमुख, एक्वाफार्म केमिकल्स ने **बहुलकों हेतु वैकल्पिक फीड स्टॉक्स** पर व्याख्यान दिया। कार्यशाला में एनसीएल के प्रमुख वैज्ञानिक, डॉ. एस.बी. ओगले ने ऊर्जा अनुप्रयोगों हेतु प्रगत कार्यमूलक पदार्थों हेतु रासायनिक मार्गों पर चर्चा की। उन्होंने ऊर्जा से सम्बन्धित समस्याओं के निराकरण हेतु सौर ऊर्जा, नैनोरसायन एवं जैवरसायनों पर प्रकाश डाला।

डॉ. सौगता प्रामाणिक, एमक्योअर फार्मा ने कार्यशाला में औषधियों की खोज में हाल ही में हुई प्रगति पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने व्याख्यान में अगले दो दशकों में औषधियों के विकास में प्रगति पर अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यशाला में प्रो. बलराम, निदेशक, भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु ने **दि रिचनेस ऑफ कैमिस्ट्री** नामक विषय पर पूर्णकालीन व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि रसायनविज्ञान के भविष्य का अनुमान करने के बजाए मैं विज्ञान एवं अनुसंधान का विगत 100 वर्षों के गौरवशाली इतिहास, जिसने मानव जीवन पर बहुत बड़ा प्रभाव डाला है, के सम्बन्ध में बोलना पसन्द करता हूं। उन्होंने आगे कहा कि प्रगत उपकरणों के प्रयोग से अच्छा अनुसंधान नहीं किया जा सकता बल्कि इसके लिए हमारे अन्दर अन्तरदृष्टि होनी चाहिए और यही सभी महान

वैज्ञानिकों की मुख्य विशेषता रही है।

डॉ. विद्या गुप्ता, वैज्ञानिक, एनसीएल ने **जैवरसायन विज्ञान के भविष्य पर एक दृष्टि** नामक विषय पर व्याख्यान दिया और उन्होंने अपना व्याख्यान मादाम मेरी क्यूरी को समर्पित किया जिन्होंने इस युग की महिलाओं के लिए विज्ञान एवं अनुसंधान का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने आगे कहा कि मौलिक संकल्पनाओं का महत्त्व कभी खत्म नहीं होता। नई एवं प्रगत प्रौद्योगिकी मौलिक संकल्पनाओं में अच्छा सुधार तथा अच्छे परिदृश्य में संशोधन करने में सहायता करती है।

कार्यशाला के संयोजक, डॉ. एम.वी. देशपांडे ने कार्यवाही का समाहार किया। अन्त में डॉ. सी.वी. रोडे ने आभार प्रदर्शन करते हुए कार्यशाला का समापन किया।

कृपया ध्यान दें

सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाओं के नोडल अधिकारियों/जनसम्पर्क अधिकारियों/ हिन्दी अधिकारियों/अनुवादकों से अनुरोध है कि वे अपने संस्थान से सम्बन्धित गतिविधियों यथा वैज्ञानिक अनुसंधान उपलब्धियों/पुरस्कार/सम्मानों/कार्यशालाओं/संगोष्ठियों आदि से सम्बन्धित समाचार/ सूचना सीएसआईआर समाचार में प्रकाशन के लिए हार्ड अथवा सॉफ्ट कॉपी में हिन्दी भाषा में ही संपादक, सीएसआईआर समाचार को भेजने की कृपा करें।

संपादक

सीएसआईआर समाचार

ईमेल: deeksha@niscair.res.in



सीएसआईआर-एन ए एल में हिन्दी दिवस समारोह

सीएसआईआर-एनएएल में 1 अगस्त से 14 सितंबर 2011 तक हर्षोल्लास के साथ हिन्दी समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का शुभारंभ राजभाषा अभिमुखीकरण कार्यक्रम के साथ हुआ। इस कार्यक्रम में प्रभाग प्रधानों, हिन्दी तकनीकी सलाहकार समिति के सदस्यों एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों ने भाग लिया। कार्यक्रम में क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग, बेंगलुरु के उप निदेशक श्री अजय श्रीवास्तव ने प्रतिभागियों को राजभाषा नीति के बारे में अवगत कराया।

इसके अलावा, हिन्दी माह के दौरान अनेक कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिताओं यथा (1) केंद्रीय विद्यालय, एनएएल कैंपस के छात्रों के लिए तीन प्रतियोगिताएं; (2) बेंगलूर स्थित केंद्रीय सरकारी कार्यालयों एवं सार्वजनिक उपक्रमों में कार्यरत कर्मचारियों के लिए तीन प्रतियोगिताएं, (3) एनएएल कर्मचारियों में हिन्दी के प्रयोग में रुचि पैदा करने के उद्देश्य से बारह प्रतियोगिताएं, (4) बेंगलूर स्तर पर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संगोष्ठी, (5) एनएएल के ग्रंथालय में दो दिवसीय हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी, (6) हिन्दी तकनीकी सलाहकार समिति की दो बैठकें, (7) प्रभागीय राजभाषा प्रतिनिधियों की एक

बैठक, (8) अनुभाग/प्रभाग में हिन्दी के प्रयोग का जायजा लेने तथा व्यावहारिक अभ्यास करवाने के उद्देश्य से चार टेबल वर्कशॉप का आयोजन किया गया। समारोह का समापन हिन्दी दिवस के दिन किया गया।

हिन्दी हमारी राष्ट्रीयता की पहचान है। यह दूसरी भारतीय भाषाओं की भगिनी है। 14 सितम्बर 2011 को आयोजित हिन्दी दिवस के अवसर पर एनएएल, बेंगलूर में श्री महादेव जी सावदती ने अपने उद्बोधन में कहा।

मुख्य अतिथि श्री सावदती (पूर्व उप-निदेशक, हिन्दी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग) ने आगे कहा कि आदत से मजबूर होकर हम अंग्रेजी में लिखना सरल और हिन्दी में काम करना कठिन समझते हैं। परंतु वास्तविकता इससे भिन्न है। यदि हम संकल्प लें और अभ्यास करते रहें तो अनायास इस सच्चाई का आभास हो जाता है।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए श्री एम के श्रीधर ने प्रसन्नता व्यक्त की कि एनएएल में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में रचनात्मक प्रयास किए जा रहे हैं।

इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को, वर्ष 2010-11 में हिन्दी

के उल्लेखनीय प्रयोग करने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों को, अंश-2011 संगोष्ठी में हिन्दी में तकनीकी लेख प्रस्तुत करने वाले एनएएल के वैज्ञानिकों एवं तकनीकी अधिकारियों को इस अवसर पर मुख्य अतिथि के करकमलों से पुरस्कार वितरण किया गया।

प्रयोगशाला की राजभाषा गतिविधियों पर प्रकाशित 'एनएएल समाचार' के राजभाषा विशेषांक वर्ष (2010-2011) का इस अवसर पर विमोचन किया गया।

समारोह के अध्यक्ष श्री एम के श्रीधर ने राजभाषा हिन्दी के उल्लेखनीय प्रयोग हेतु एसईडी एवं एएलडी को उत्तम प्रभाग शील्ड तथा केटीएमडी को उत्तम अनुभाग शील्ड (वर्ष 2010-2011) प्रदान की।

डॉ. जर्तींदर सिंह (वरिष्ठ वैज्ञानिक एफएमसीडी) ने वायुयान वायुगतिक अभिलक्षणों के उड़ान परीक्षण आकलन पर हिन्दी दिवस विशेष तकनीकी अभिभाषण प्रस्तुत किया।

हिन्दी दिवस समारोह का संचालन एनएएल के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी डॉ. प्र श्री मूर्ति ने किया और हिन्दी अधिकारी श्रीमती जयश्री पी जी ने औपचारिक धन्यवाद प्रस्ताव दिया।



राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (निस्केयर), डॉ. के.एस. कृष्णन मार्ग, नई दिल्ली-110012 के लिए दीक्षा बिष्ट द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित, निस्केयर प्रेस द्वारा मुद्रित।

संपादक: दीक्षा बिष्ट; सह संपादक: डॉ. विनीता सिंघल; अनुवाद: मीनाक्षी गौड़; डिजाइन एवं ले आउट: सरला दत्ता; कम्पोजिंग: कृष्णा

फोन: 25848702, 25846301, 25846303, 25842990, 25846304-7/361 ग्राम: PUBLIFORM, New Delhi; फैक्स: 25847062

ई-मेल: deeksha@niscair.res.in वेबसाइट: http://www.niscair.res.in पत्रिका प्राप्त न होने की स्थिति में फोन नं. 25841647 पर सम्पर्क करें